अरबों का सिन्ध पर आक्रमण

अखि० डॉ० डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
बी० एम० कॉलेज, रक्सिा, मधुबनी
मो०-8051796750

शक्तिशाली गुप्त-साम्राज्य के नष्ट हो जाने के पश्चात् सम्राट हर्ष ने एक बार फिर भारत में एक विस्तृत और दृढ़ साम्राज्य को स्थापित करने का प्रयत्न किया। इस कार्य में हर्ष आंशिक रूप से सफल भी रहा। किंतु हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत की एकता खंडित हो गई, विभिन्न स्थानों पर स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना हो गई और अनेक नवीन राजवंशों का उदय भी हुआ। ऐसा नहीं था कि ये सभी राज्य छोटे-छोटे और दुर्बल थे, बल्कि इनमें से विभिन्न राज्य शक्ति और विस्तार की दृष्टि से काफी विशाल थे, परन्तु उनकी दुर्बलता का मुख्य कारण उनकी पारस्परिक प्रतिस्पर्धा थी। विदेशी परिस्थितियों से पूर्णतया अनभिज्ञ और विदेशी आक्रमणों के प्रति उदासीन ये सभी राज्य यश और क्षेत्र-विस्तार के लिये आपस में युद्धरत थे। भारत की राजनीतिक दुर्बलता का यही मुख्य कारण था।

प्राचीन काल एवं पूर्व मध्यकाल के शुरुआती चरण में लगभग 8वीं शताब्दी तक भारत का पश्चिमोत्तर भाग हिन्दू राजवंशों के शासनाधीन था। ये हिन्दू राज्य उत्तर-पश्चिमी सीमा पर मौजूद होने के कारण इन्हें अरबों के आक्रमणों का भी सामना करना पड़ा। सिन्ध जहाँ से अरबों ने प्रवेश किया, एक विस्तृत राज्य था उसकी सीमायें उत्तर में काश्मीर राज्य से पूर्व में कन्नौज तक एवं तथा दक्षिण में समुद्र से मिलती थी। पश्चिम में मकरान उसकी सीमाओं के अन्तर्गत था। उस समय वहाँ का शासक दाहिर था, जो ब्राह्मण था। उसके पिता ने चाच ने अपने राजा को मारकर कुछ समय पहले ही सिन्ध को प्राप्त किया था। दाहिर का शासन निम्न-वर्ग और मुख्यतया वहाँ की लड़ाकू जाट-जाति के प्रति असहिष्णुता का था। इस कारण आन्तरिक संघर्ष और असंतोष से व्याप्त सिंध का राज्य दुर्बल हो गया था। इस प्रकार अरबों के आक्रमण के समय भारत राजनीतिक दृष्टि से विभक्त था, परन्तु सिंध के अतिरिक्त किसी स्थान पर दुर्बल न था। विभिन्न शासकों के पारस्परिक संघर्ष और उनकी महत्वाकांक्षाएं उनकी दुर्बलता का कारण अवश्य थी। परन्तु साधारण विदेशी आक्रमण उनकी शक्ति को समाप्त करने की क्षमता नहीं रखते थे।

सिन्ध पर अरबों के द्वारा किये गये आक्रमणों से पूर्व शताब्दियों तक भारत तथा अरब जगत के बीच व्यापारिक संबंध थे। किन्तु अरब जगत पर खलिफाओं की सत्ता के पश्चात् ये संबंध केवल व्यापारिक न होकर राजनीतिक हो गये। 8 वीं शताब्दी के ~~अरब~~ आरम्भ में मकरान पर अरब सैनिकों की जीत ने उनके सिन्ध पर विजय के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया। अरबों के सिन्ध पर आक्रमण करने का मुख्य उद्देश्य धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक थे तलवार की शक्ति के आधार पर इस्लाम का प्रचार करना सभी खलिफाओं की नीति का उद्देश्य रहा था। सिन्ध पर आक्रमण भी इसी उद्देश्य से किया गया। इसके अतिरिक्त भारत से व्यापार करने वाले अरब भारत की आर्थिक सम्पन्नता से अवगत थे। इस कारण धन की लालसा भी इनके आक्रमण का एक लक्ष्य रहा था, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता। सिंध के समुद्री डाकुओं द्वारा कुछ अरब जहाजों को लूटा जाना तो सिंध पर आक्रमण करने का एक बहाना मात्र माना जा सकता है दरअसल समुद्री डाकुओं द्वारा अरब जहाज को लूट लिये जाने के पश्चात् इराक के सूबेदार हज्जाज ने सिन्ध के राजा दाहिर से हर्जाना माँगा। दाहिर ने समुद्री लुटेरों के कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लिया और हर्जाना देने से इंकार कर दिया। हज्जाज इससे क्रोधित हो गया तथा उसने खलिफा वालिद से सिन्ध पर आक्रमण करने की आज्ञा प्राप्त कर ली

हज्जाज ने एक सेना उबैदुल्ला के नेतृत्व में सिन्ध पर आक्रमण करने के लिये भेजी किन्तु उबैदुल्ला की पराजय हुई और वह मारा गया। पुनः हज्जाज ने 711 ई० में एक शक्तिशाली सेना 17 वर्षीय मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिन्ध पर आक्रमण करने के लिये भेजी। कासिम ने 6000 सीरियन घुड़सवार, इतने ही ऊँट और 3000 सामान ढोने वाले ऊँटों की सेना लेकर मकरान के मार्ग से ~~अर~~ सिन्ध पर आक्रमण किया। इस कार्य में उसे सिन्ध के जाटों तथा मेंदो (स्थानीय जातियाँ) का समर्थन प्राप्त हुआ। जिसके पश्चात् कासिम देवल, निरुन, सीसम होता हुआ ब्राह्मणा-वाद पहुँचा। इन तमाम क्षेत्रों की विजय के पश्चात् दाहिर चौकन्ना हुआ। जिसके पश्चात् उसने अपनी सेना रावर के मैदान में उतारी। दाहिर के सेना में 50,000 सैनिक थे हस्ति सेना और घुड़सवार सेना भी थी। कई दिनों तक दोनों की सेनायें आपस में संघर्षरत रही किन्तु अन्ततः इस युद्ध में दाहिर मारा गया। दाहिर की पत्नी

P.T.O

सहित किले मौजूद सैकड़ों स्त्रियों ने जौहर कर अपने सतीत्व की रक्षा की। दाहिर के बाद जयसिंह के नेतृत्व में सेना ने अरबों का मुकाबला किया किन्तु वे पराजित हुए। जयसिंह भागकर चित्तुर चला गया और किला पर अरबों का अधिकार हो गया। वहाँ पर मुहम्मद को दाहिर की सम्पूर्ण सम्पत्ति, उसकी एक अन्य पत्नी लाड़ी और दो कुँआरी पुत्रियाँ सूर्यदेवी तथा परमालदेवी मिली जिसे उसने खलीफा की सेवा के लिये भेज दिया। उसके पश्चात् कासिम ने सिन्ध की राजधानी आरोर पर भी अधिकार कर लिया, जिसकी रक्षा दाहिर का एक अन्य पुत्र कर रहा था। इस प्रकार अरबों की सिन्ध विजय पूर्ण हो गई।

713 ई० के प्रारम्भ में मुहम्मद बिन कासिम मुल्तान की ओर बढ़ा। मार्ग में उसे कई कठिन युद्ध करने पड़े, परन्तु अन्त में वह सफलता से मुल्तान पहुँच गया। एक देशद्रोही ने अरबों को उस जलधारा के विषय में बता दिया जिससे किले में पानी जाता था। अरबों ने इस जल-प्रवाह को रोक दिया फलस्वरूप मुल्तान के किले ने आत्मसमर्पण कर दिया। अरबों को वहाँ इतना सोना प्राप्त हुआ कि उन्होंने मुल्तान का नाम 'सोने का नगर' रख दिया। मुल्तान की विजय भारत में अरबों की अन्तिम विजय थी।

किन्तु सिन्ध का विजेता मुहम्मद बिन कासिम अधिक समय तक जीवित नहीं रह सका। खलीफा के पास कासिम के द्वारा भेजी गई दाहिर की दोनों पुत्रियाँ सूर्यदेवी तथा परमालदेवी ने खलीफा के समक्ष कासिम के द्वारा स्वयं के सतीत्व भंग करने का झूठा आरोप लगाया जिसके पश्चात् कासिम को मृत्यु दंड दे दिया गया।

खलीफा सुलेमान ने कासिम को हटाकर याजिद को सिन्ध का सूबेदार बनाया। परन्तु सिन्ध पहुँचने के 18 दिन पश्चात् याजिद की मृत्यु हो गयी। उसके स्थान पर हबीब सूबेदार बनाया गया। हबीब ने शान्ति और समझौते की नीति का पालन किया जिसके कारण दाहिर के लड़के जयसिंह ने ब्राह्मणावाद को अपने स्वामित्व में कर लिया। परन्तु 717 ई० में खलीफा उमर द्वितीय के समय में इस उदारता की नीति को छोड़ दिया गया और हिन्दुओं को इस्लाम स्वीकार करने के लिये बाध्य किया गया। खलीफा हिशाम के समय में इस नीति को और आगे बढ़ाया गया और सूबेदार जुनियाद ने

P.T.O

सभी स्थानों पर प्रत्यक्ष अरब शासन को स्थापित किया। जुनियाद और उसके उत्तराधिकारी सूबेदारों ने सिन्ध के बाहर भी आक्रमण किये परन्तु उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। 750 ई० में उमय्यद खलीफा को अब्बासी खलीफा ने हटा दिया और उसने मुसा को सूबेदार बना-कर सिन्ध भेजा जिसने उमय्यद-खलीफा के सूबेदार मन्सूर से युद्ध करके सिन्ध को उससे छीन लिया। अरबों के इस पारस्परिक संघर्ष से सिन्ध में उनकी शक्ति दुर्बल हुयी। इनके अलावा जैसे-जैसे खलीफाओं की शक्ति और सम्मान कम होते गये, वैसे-वैसे सिन्ध पर उसका आधिपत्य ढीला होता गया और सिन्ध में अरबों की शक्ति दुर्बल पड़ती गई। 871 ई० तक सिन्ध में खलीफाओं की सत्ता प्राय: समाप्त हो गयी। अन्त में सिन्ध में अरबों के दो स्वतन्त्र राज्य बन गये। इनमें से एक सिन्ध के ऊपरी भाग में मुल्तान को सम्मिलित करते हुए आरोर तक फैला हुआ था और दूसरा निचले सिन्ध में मन्सूरी को सम्मिलित करते हुए समुद्र-तट तक फैला हुआ था। महमूद गजनवी के आक्रमणों के समय सिन्ध की राजनीतिक स्थिति यही थी। इससे स्पष्ट है कि अरब सिन्ध पर तो अपने अधिकार को सुरक्षित रख सके परन्तु भारत के अन्य प्रदेश में प्रवेश पाने में असफल रहे।